VALUE 360 COMMUNICATIONAS
NEWS WATCH

Dainik Jagran

Date: 17/07/2009
Edition: Noida

Page: 17
Language: Hindi

बाजार की जरूरत के हिसाब से कराएं पढ़ाई

सेक्टर-62 स्थित आईआईएम लखनऊ में आयोजित सेमिनार को संबोधित करते वक्ता व बैठे लोग। जागरण

- एमबीए की पढ़ाई को लेकर आईआईएम में सेमिनार आयोजित
- छात्रों को राइट टीचर्स राइट टीचिंग की आवश्यकता

नोएडा, संवाददाता : आईआईएम लखनऊ के नोएडा कैंपस में बृहस्पतिवार को 'एमबीए में गायब तत्व' विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। एमबीए की तैयारी को लेकर प्रबंधन से जुड़े जाने माने लोगों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। इस दौरान उन बिंदुओं पर भी चर्चा की गई जिसमें छात्र एमबीए तो कर लेता है, लेकिन उसे अच्छी नौकरी नहीं मिल पाती।

फिनिशिंग स्कूल चैन एलीमेंट्स एकेडमिया द्वारा आयोजित सेमिनार में एमबीए की पढ़ाई के दौरान आ रही कमियों पर वक्ताओं ने कहा कि आज प्रतिस्पर्धा का दौर है।

चाहे वह व्यापार हो या फिर शिक्षा जगत से जुड़ा क्षेत्र। कॉलेज छात्रों से मोटी फीस तो वसूल लेते हैं, लेकिन उनको वह शिक्षा मुहैया नहीं करवाते जिसकी बाजार में सबसे ज्यादा मांग है। आज एमबीए के छात्रों को अच्छी नौकरी न मिल पाने का सबसे बड़ा कारण कम्युनिकेशन प्रोबलम है।

इसके बाद अधिकतर बच्चों में भाषा की समस्या भी देखने को मिली है। कंपनियां इंग्लिश में दक्ष बच्चों को प्राथमिकता देती हैं, लेकिन भारत हिंदी भाषी देश होने के चलते इंग्लिश सबसे बड़ी समस्या है। कॉलेज छात्रों को आकर्षित करने के लिए दिखावे पर विश्वास करते हैं। एमबीए के नाम पर मोटी फीस तो ले ली जाती है, लेकिन जब प्लेसमेंट की बारी आती है तो बच्चों की गलतियां निकालकर हाथ पीछे खींच लिए जाते हैं, जबकि कॉलेज प्रबंधन को इस तरह की व्यवस्था करनी चाहिए कि पढ़ाई के दौरान ही बच्चों में व्याप्त कमियों का आंकलन कर उन्हें दूर किया जा सके। आज राइट टीचर्स राइट टीचिंग का दौर है। कॉलेज बाजार की जरूरत को समझते हुए उस तरह का प्रोडक्ट तैयार करने में अपना योगदान दें।

सेमिनार में नोएडा, ग्रेटर नोएडा और एनसीआर के विभिन्न कॉलेजों के प्रबंधन से जुड़े प्रोफेसर, आईआईएम लखनऊ नोएडा कैंपस के प्लेसमेंट चेयरमैन नीरज पांडे, ओएनजीसी के एचआर जतिंद्र, उप्र स्टेट काउंसिल के सदस्य संजय गुप्ता समेत काफी संख्या में शिक्षा एवं व्यापार जगत से जुड़े लोग मौजूद रहे।

कैंपस से

जारी है छात्रों का आंदोलन

दादरी, संस : मिहिर भोज डिग्री कॉलेज में सीटें बढ़ाने को लेकर चल रहा आंदोलन चौथे दिन भी जारी रहा। इस आंदोलन में बृहस्पतिवार को सपा जिलाध्यक्ष बिजेंद्र भाटी ने कहा कि छात्रों की मांगें जायज हैं।

उन्होंने आंदोलन को समर्थन देते हुए कहा कि प्रदेश सरकार छात्रों के साथ अन्याय कर रही है। छात्र संघर्ष समिति के नेता सुमित बसौया ने बताया कि अगर उनकी मांगें नहीं मानी गईं तो प्राचार्य, कुलपति व उच्च शिक्षा मंत्री के पुतले भी फूंके जाएंगे।

उन्होंने बताया कि 18 जुलाई को कॉलेज में छात्र महापंचायत का आयोजन किया जाएगा, जिसमें क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों से पहुंचने की अपील की जाएगी। इस महापंचायत में आगे की रणनीति तैयार की जाएगी। इस मौके पर श्यामवीर सिंह, रोहित, राहुल, अनिल, सुनित, टीकम, अनिता, रेनू आदि मौजूद थे।